दिनांक - 28-03-2020

कॉलेज का नाम :- मालवारि कॉलेज दरभंगा

वर्ग :- 12वीं इतिहास (History)

कांस्य काल : हड़प्पा एवं सिंधु घाटी की सभ्यता

बीसवीं शती द्वितीय दशक तक पाश्चात्य विद्वानों की यह धारणा थी कि सिकन्दर के आक्रमण ई॰ पू॰ 326 के पूर्व भारत के कोई सभ्यता ही नही थी। परंतु इस शती के तृतीय दशक में भ्रामक धारणा का निराकरण हुआ जबकि दो प्रसिद्ध पुरातत्वशास्त्रियों - दयाराम साहनी तथा राखालदास बनर्जी ने हड़प्पा (पंजाब के मान्टगोमरी जिले में स्थित) तथा मोहनजोदड़ो (सिंध के लरकाना जिले में स्थित) के प्राचीन स्थलो से पुरावस्तुये प्राप्त करके यह सिद्ध कर दिया कि परस्पर 640 किलोमीटर की दूरी पर बसे हुए ये दोनो ही नगर कभी एक ही सभ्यता

के दो केन्द्र थे। विगट महोदय ने इन्हे एक विस्तृत साम्राज्य की जुड़वा राजधानियाँ कहा है। साहनी तथा बनर्जी के पश्चात् सर जॉन मार्शल तथा माधव स्वरूप वत्स ने क्रमशः मोहेन जोदड़ो एंव हड़प्पा मे कई वर्षो तक उत्खनन करके महत्वपूर्ण सामग्रियाँ प्राप्त किया। इनके अतिरिक्त कुछ अन्य विद्वानो - के० एन० दीक्षित, अर्नेस्ट. मैके, आरेल स्टीन, ए० घोष, जे० पी० जोशी आदि ने भी इस सभ्यता की खोज मे महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस पुरी सभ्यता को सिंधु नदी घाटी की सभ्यता, अथवा इसके मुख्य स्थल हड़प्पा के नाम पर हड़प्पा की सभ्यता कहा जाता है। कुछ विद्वानो का विचार है कि चूँकि इस सभ्यता का स्थल हड़प्पा के नाम पर हड़प्पा की विस्तार सिंधु घाटी के बाहर बहुत बड़े क्षेत्र मे था, अतः इसका नामकरण सिंधु सभ्यता

के प्रथम स्थल के नाम पर हड़प्पा सभ्यता कहना अधिक उपयुक्त होगा। इस सभ्यता के प्रकाश में आने से भारतीय इतिहास की प्राचीनता बढ जाती है और अब इस विश्वास के लिये कारण है कि भारत देश भी मेसोपोटामिया तथा मिस्र की सभ्यताओं के साथ ही अपनी एक ~~स्वतं~~ स्वतंत्र सभ्यता का विकास कर रहा था जो उनकी समकालीन होते हुए भी अनेक अर्थों में उनसे बढकर थी।

सैन्धव सभ्यता - 2500 ई० पू० के आस-पास अपनी पूर्व विकसित अवस्था में प्रकट होती है। यह केवल सिंधु नदी-घाटी तक की सीमित नही थी पाकिस्तान के बलूचिस्तान में सुत्कगेनडोर, सोत्काकोह तथा बालाकोट प्रसिद्ध पुरास्थल है। सिंध प्रान्त मे मोहेन जोदड़ो तथा चन्हुदड़ो के अतिरिक्त कोटदीजी, आमरी तथा जुडीरोदड़ो के पुरास्थलो है। इसी प्रकार पंजाब मे हड़प्पा के अतिरिक्त

डेरा इस्माइल खान, रहमान ढेरी, सराय खोला, जलीलपुर के पुरास्थलों से सैंधव सभ्यता के कई प्राचीन अवशेष मिलते हैं। भारतीय उप-महाद्वीप के पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात जम्मु-कश्मीर तथा उत्तर प्रदेश प्रान्तों से पुरातत्वविदों ने इस सभ्यता के बहुसंख्यक स्थलों की खोज निकाला है। पंजाब में रोपड़, कोटला निहङ तथा संघोल, हरियाणा में बनावली, राखीगढ़ी तथा मित्ताथल, राजस्थान में कालीबंगन, गुजरात में रंगपुर लोथल, देसलपुरा तथा भोगत्रार, रोजदि, सुरकोटड़ा, मालवण, महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले में स्थित दैमाबाद, जम्मू-कश्मीर में चीनाब नदी के दाहिने किनारे पर स्थित माण्डा, उत्तर प्रदेश में आलमगीरपुर (मेरठ) बड़ागाँव और हुलास (सहारनपुर) आदि से सैंधव सभ्यता के अवशेष पाये गये हैं।